कलाओं के मध्य अंत:संबंध और अंतरप्रतीकात्मक अनुवाद की संभावना

मेघा आचार्य

शोधार्थी

अनुवाद अध्ययन

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्व विद्यालय ,वर्धा महाराष्ट्र

सारांश

अंतरप्रतीकात्मक अनुवाद, अनुवाद के सृजनात्मक प्रकृति को दर्शाता है जिसमें अनुवादक अपनी सर्जनात्मक प्रतिभा से एक संकेत व्यवस्था(sign system) से दूसरी संकेत व्यवस्था के माध्यम से कथ्य को एक नए रूप में ढाल देता है। अंतरप्रतीकात्मक अनुवाद वास्तव में साहित्यिक संकेत व्यवस्था का कलागत संकेत व्यवस्था में किया गया रुपांतरण(Transmutation) है। चित्रकला, संगीतकला, नृत्यकला आदि कला के क्षेत्र ऐसी ही भाषेतर संकेत व्यवस्थाएँ हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में यह स्पष्ट किया गया है कि अंतरप्रतीकात्मक अनुवाद की दृष्टी से भाषिक ध्वनिओं के अभाव में भी भाषेतर संकेत व्यवस्थाओं में लक्ष्य पाठ के रूप में भावों तथा विचारों को अभिव्यक्ति प्रदान करने की क्षमता हैं। और कलाओं के बीच परस्पर संबंध एक ऐसा तत्व है जो अंतरप्रतीकात्मक अनुवाद की संभावना की और अंगुलीनिर्देश करता है। यह तथ्य उस स्थिति की ओर संकेत करता है जो मूल पाठ के संदेश को कोई भी संकेत व्यवस्था समानभाव से ग्रहण कर सकती है। अत: भाषिक एवं भाषेतर प्रतीक व्यवस्थाओं की तुलना संभव है।

मुख्य शब्द : कला, अंतरप्रतीकात्मक अनुवाद, संकेत व्यवस्था, अंत:संबंध ।

अंतरप्रतीकात्मक अनुवाद की संकल्पना और कला

अनुवाद को सरल रूप में समझा जाए तो यह एक भाषा से दूसरी भाषा में कथ्य के अंतरण की प्रक्रिया है। अर्थात अनुवाद का संबंध एक भाषा (स्रोत भाषा पाठ) से दूसरी भाषा (लक्ष्य भाषा पाठ) में कथ्य के अंतरण से है। अनुवाद की संकल्पना में मूल और स्रोत पाठ 'भाषा' होता है। लेकिन अनुवाद का स्वरूप वर्तमान में भाषा तक ही सीमित नहीं रह गया है, बल्कि अनुवाद अब भाषिक पाठ से परे भाषेतर माध्यमों को छू रहा है। अनुवाद के स्वरूप को दो संदर्भों में देखा जाने लगा है- सीमित संदर्भ और व्यापक संदर्भ। सीमित संदर्भ में अनुवाद भाषिक प्रक्रिया है, और व्यापक संदर्भ में यह भाषिक और भाषेतर माध्यमों को भी अपने भीतर ले लेता है। इस सब का आधार वस्तुत: याकोब्सन द्वारा प्रतिपादित भाषिक प्रतीक की व्याख्या के तीन प्रकार है। अपने लेख On Linguistic Aspects Translation में प्रतीक व्यवस्था के परिप्रेक्ष्य में किसी भाषिक पाठ के प्रतीकों के अंतरण के तीन प्रकारों- अंत:भाषिक अनुवाद या पुन:कथन(Intralingual translation or rewording), अंतरभाषिक अनुवाद या अनुवाद (Interlingual translation or Translation proper) और अंतरप्रतीकात्मक अनुवाद या रुपांतरण (Intersemiotic translation) -का निरुपण किया। अंतरप्रतीकात्मक अनुवाद की संकल्पना प्रस्तावित करते हुए रोमन याकोब्सन कहते हैं- Intersemiotic translation or transmutation is an interpretation of verbal sign by means of nonverbal sign systems."[1]

अंतरप्रतीकात्मक अनुवाद भाषिक संकेतों (linguistic signs) का भाषेतर संकेत व्यवस्था

में रुपांतरण है। किसी कहानी या उपन्यास पर फिल्म बनाना अंतरप्रतीकात्मक अनुवाद का ही उदाहरण है। यहाँ ध्यान देने की बात यह है कि अंतरप्रतीकात्मक अनुवाद में स्रोत संकेत व्यवस्था भाषिक है और लक्ष्य संकेत व्यवस्था भाषेतर। कुबिले अक्तलम अपने आलेख 'व्हाट इज सिमियोटिक्स? ए शॉर्ट डेफिनेशन एंड सम एक्जाम्पल्स' में अंतरप्रतीकात्मक अनुवाद के अर्थ को स्पष्ट करते हुए इसके उदाहरण देते हुए कहती हैं-

"The intersemiotics (translation or transposition) deals with two or more completely different codes, e.g., linguistic one vs. music and/or dancing, and/or image ones. Thus, when Tchaikovsky composed the Romeo and Juliet, he actually performed an intersemiotic translation: he 'translated' Shakespeare's play from the linguistic code into a musical one. The expression code was changed entirely from words to musical sounds. Then, as it was meant for ballet, there was a ballet dancer who 'translated' further, from the two previous codes into a 'dancing' one, which expresses itself through body movement."[2]

अर्थात अंतरप्रतीकात्मक अनुवाद का संबंध भाषिक और भाषेतर प्रतीक व्यवस्था से है। अनुवाद की मूलभूत शर्त है कि इसके स्रोत पाठ से कथ्य को लक्ष्य पाठ में ले जाया जाए। अंतरप्रतीकात्मक अनुवाद की संकल्पना भी इस शर्त को पूरा करती है। यही अनुवाद का व्यापक स्वरूप है।

अंतरप्रतीकात्मक अनुवाद, अनुवाद के सृजनात्मक प्रकृति को दर्शाता है जिसमें अनुवादक अपनी सर्जनात्मक प्रतिभा से एक संकेत व्यवस्था(sign system) से दूसरी संकेत व्यवस्था के माध्यम से कथ्य को एक नए रूप में ढाल देता है। अंतरप्रतीकात्मक अनुवाद वास्तव में साहित्यिक संकेत व्यवस्था का कलागत संकेत व्यवस्था में किया गया रुपांतरण (Transmutation) है। भाषा अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। इसके अलावा भाषेतर माध्यम- चित्रकला, संगीतकला, नृत्यकला आदि कला के क्षेत्र ऐसी भाषेतर संकेत व्यवस्थाएँ हैं जिनमें भाषिक ध्वनिओं के अभाव में भी भावों तथा विचारों को अभिव्यक्ति प्रदान करने की क्षमता हैं। लेकिन भाषेतर माध्यमों की तुलना में भाषिक माध्यम अधिक सशक्त माना जाता है।

अंतरप्रतीकात्मक अनुवाद संकल्पना इस तथ्य की ओर भी संकेत करता है कि कथ्य और अभिव्यक्ति के संबंधों पर आधारित संकेत की वास्तविक सत्ता उसकी संकेतात्मकता(सिग्निफिकेशन)में होती है न कि उसके मात्र कथ्य या आभिव्यक्ति पक्ष में।[3] यह संकेतात्मकता संकेत को एक मूल्य प्रदान करती है जिसे भिन्न प्रकार की उपादान सामग्री द्वारा व्यक्त करना संभव है। अत: इस दृष्टी से भाषिक से भाषेतर(कलागत माध्यम) संकेत व्यवस्था में अंतरप्रतीकात्मक अनुवाद संभव है।

कलाओं में अंत:संबंधिता

कला का संबंध एक ओर भावना और बुद्धि से है, दूसरी ओर कौशल और शिल्पकर्म से तो तीसरी ओर यह प्रसन्न और उन्मत्त करने के प्रभाव से संबद्ध है। अत: कला का व्यापकत्व स्वयं ही स्पष्ट हो जाता है। और इस दृष्टी से उनमें अंत:संबंध के बिंदु निम्नानुसार खोजे जा सकते हैं-

कलाओं में तात्विक अंत:संबंध

कला और कलाकार के लिए जो भी तत्व आवश्यक है उनमें से एक है- कल्पना तत्व। कला और कलाकार के लिए कल्पना तत्व उसी प्रकार अनिवार्य है जिस प्रकार साहित्य रचना के लिए शब्द, चित्रों के लिए कुंची या संगीत के लिए स्वर। कल्पना भावांकन का साधन मात्र है। मनुष्य द्वारा भावों की अभिव्यक्ति यदि रंग रेखाओं, गतियों, ध्वनियों व भावानुरूप शब्दों से भी की जाए तो यह अभिव्यक्ति ही कला होती है।

कला में दूसरा महत्वपूर्ण तत्व है सौंदर्य। वस्तुत: समस्त कलाओं का आधार मनुष्य की सौंदर्य-प्रियता ही है जिसके कारण

वह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सौंदर्य भरने का प्रयास करता है। विविध कलाओं का सृजन तथा विकास और इस तरह से सभ्यता और संस्कृति के विकास का आधार मनुष्य की सौंदर्य साधना है।

ललित कलाओं के अंत:संबंध पर गंभीरतापूर्वक विचार करते हुए डॉ. कुमार विमल कहते हैं,'शैली, शिल्प, अभिव्यक्ति-भंगिमा और प्रेषणीयता के माध्यम की दृष्टि से ललित कलाओं में चाहे जितनी भिन्नता हो; किंतु तत्व समास की दृष्टि से सभी कलाएं समान हैं और इनमें एक तात्विक अंत:संबंध अनिवार्य रूप से विद्यमान है।[4] कल्पना, बिंब, प्रतीक, प्रेषणीयता, विषय, विधान इत्यादि अनेक ऐसे प्रमुख और गौण तत्व हैं, जो स्थापत्य, मूर्ति, चित्र, काव्य और संगीत -सभी ललित कलाओं में समान रूप से समाविष्ट हैं। इन सभी तत्वों के विनियोग में विविध कलाओं के क्षेत्र में मात्र-भेद अवश्यंभावी है, जैसे- काव्य में कल्पना की अधिकता, संगीत में प्रेषणीयता की अधिकता, चित्र में चाक्षुष सौंदर्य की प्रचुरता, मूर्ति और स्थापत्य में विषय-रूप स्थूल साधनों की अधिकता –किंतु, इन तत्वों की अनिवार्य उपस्थिती ही ललित कलाओं के पारस्परिक अंत:संबंध को प्रमाणित करती है।[5]

सैद्धांतिक दृष्टि से देखे तो 'दृश्य कलाओं में वर्ण बोध(कलर पर्सेप्शन) की प्रधानता रहती है और श्रव्य कलाओं में स्वर-बोध की'।[6] और व्यावहारिक रूप में 'प्रत्येक स्वर-वैशिष्ट्य का किसी न किसी निश्चित रंग से संबंध जोड़ा जा सकता सकता है'।[7] भावों की एकता के कारण कभी-कभी श्रोता किसी स्वर को किसी रंग के साथ जोड़ लेता है। इसकी पुष्टि करता है भारतीय काव्यशास्त्र। भारतीय काव्यशास्त्र में चाक्षुष कलाओं के उपदान- रंग को रस निष्पत्ति के साथ जोड़ा गया है। जैसे भयानक रस के लिए काला रंग, रौद्र रस के लिए लाल रंग, करुण रस के लिए मटमैला रंग, हास्य रस के लिए श्वेत रंग, अद्भुत रस के लिए पीला रंग आदि। कहने का तात्पर्य यह है कि कलाओं के बीच श्रव्यता तथा दृश्यता पार्थक्य का मुख्य बिंदु होते हुए भी आस्वादन के एक स्तर पर जा कर यह परस्पर मिल जाते हैं और कलाओं के मध्य अंत:संबंध की स्थिति स्वयं सिद्ध हो जाती है।

काव्य और चित्र के संबंध में बात करें तो 'चित्रकला का तात्विक समावेश काव्य में प्राय: बिंब का रूप धारण कर लेता है। चित्र धर्मिता को स्वीकार किए बिना काव्य-निबद्ध अनुभूति, संवेग और कल्पना में अभिव्यक्तिगत सौंदर्य और सहृदय पक्ष की भावन-सुलभता के लिए अपेक्षित मूर्तता का आधान नहीं हो पाता है।'[8] 'कविता और चित्र में अनुभूति, कल्पना, सौंदर्य, रस, अलंकार सभी तत्वों का अपना अस्तित्व और महत्व है। कविता में शब्दार्थों के माध्यम से अनुभूति बिंबों, प्रतीकों, अलंकारों का सहारा लेकर सौंदर्य की सृष्टि करती है तथा रसानुभूति में परिवर्तित हो जाती है। चित्र में यही अनुभूति विभिन्न रंगों और रेखाओं के संयोजन द्वारा रसज्ञ का ध्यान आकृष्ट करती है। इस प्रकार विभिन्न तत्व काव्य कला और चित्रकला के सृजन में कभी उपकरण तो कभी उपादान और कभी माध्यम बनकर सहायक होते हैं तथा अपनी स्थिति के अनुसार भूमिका निभाते हैं।' [9]

कला और साहित्य के सृजन की सामान प्रेरणा - अनुभूति एवं सौंदर्यानुभूति

'साहित्य और कला की प्रेरणाएं समान हैं, उनके अवतरण की भूमि समान है। दोनों ने समान पृष्ठभूमि - जीवन – से अपना भाग पाया है, समान उपकरणों से दोनों ऋद्ध हुए है।' काव्य या कला के सृजन में अनुभूति प्रेरणास्वरूप भूमिका निभाती है। क्रोंचे का कथन है कि "अनुभूति वहीं है, काव्य या कलाओं के रूप में अभिव्यक्ति होती है। जिस अनुभूति में यह अभिव्यक्ति-क्षमता नहीं हैं, वह वास्तव में अनुभूति न हो कर कोरी इंद्रियता या मानसिक जमुहाई मात्र है।" वह अनुभूति जो आत्मिक व्यापार का परिणाम है, सौंदर्य-रूप में अभिव्यक्त हुए बिना नहीं रहती और इसके प्रकाशन के माध्यम कागज-कुंची, स्वर-ताल-लय का योग, पाषाण की काट-छाट या शब्द हो सकते हैं। अत: काव्य और चित्रकला में समधर्मी तत्व है कला-सृजन की प्रेरणा देने वाली अनुभूति तथा सौंदर्यानुभूति। इन्हीं का साकार रूप कला-कृति में प्रत्यक्ष होता है। अत: इन्हें कलाओं के बीच अंत: संबंध का एक आधार कहा जा सकता है।

विष्णुधर्मोत्तर पुराण का संदर्भ

समस्त कलाओं के बीच अंत:संबंध की बात करें तो विष्णुधर्मोत्तर पुराण के तीसरे खंड 'चित्रसूत्र' में वर्णित राजा वज्र और

ऋषि मार्कंडेय के बीच वार्तालाप भी विविध कलाओं में अंत:संबंध होने का संकेत देता है, जिसमें राजा वज्र ऋषि मार्कंडेय से देव-प्रतिमा निर्माण की विधि ज्ञान प्राप्त करना चाहता है और उत्तर में मार्कंडेय मूर्तिकला को जानने के लिए चित्रकला के नियम, चित्रकला को समझने के लिए नृत्यकला का ज्ञान तथा नृत्यकला को जानने के लिए वाद्य-संगीत के ज्ञान की आवश्यकता का वर्णित करते हैं। इस तरह कलाओं के अंतर संबंधों की चर्चा करते हुए यह संवाद व्याकरण तक पहुंच जाता है। इस संवाद का मूल है, कलाओं की परस्पर निर्भरता। 'चित्रसूत्र' स्पष्ट करता है कि सभी कलाएं अंतर्गुम्फित है।

सारांश

अत: कलाओं के तुलनात्मक अध्ययन से यह जान पड़ता है कि शैली, शिल्प, अभिव्यक्ति –भंगिमा और माध्यम की दृष्टि से भले ही कलाओं में भिन्नता हो, लेकिन कल्पना, बिम्ब, प्रतीक, विषय, अभिप्राय, रूप आदि की दृष्टि से उनमें अंत:संबंध अनिवार्य रूप से उपस्थित होता है। अत: इस प्रकार कहा जा सकता है कि कलाओं में पारस्परिक संबंध को भावों, विचारों अनुभूतियों के आधार पर परखा जा सकता है। और इस प्रकार अभिव्यक्ति के दो भिन्न माध्यम होने के बावजूद भी इनके मध्य अनुवाद की संभावना को नकारा नहीं जा सकता।

भाषा अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम होने के बावजूद भी अनुवाद के संबंध में दो तथ्य दृश्य है, पहला- अनुवाद में कुछ छुट जाना और नया कुछ जुड़ जाना एक सामान्य संभावना है; और दूसरा पूर्ण अनुवाद असंभव है। भाषिक अनुवाद की तुलना में भाषेतर अनुवाद में इन दोनों तथ्यों की संभावना भले ही अधिक हो परंतु भाषिक व्यवस्था से भाषेतर अनुवाद असंभव नहीं है। और कलाओं के मध्य अंत:संबंध के आधार पर यह स्पष्ट भी है।

पादटिप्पणियां

1. Jakobsan, Roman. On Linguistic Aspects of Translation
2. Aktulum, Kubilay. What Is Intersemiotics? A Short Definition and Some Examples, http:// www.ijssh.org/vol7/791-HS0013.pdf
3. रविन्द्रनाथ श्रीवास्तव, अनुवाद का सामायिक परिप्रेक्ष्य (संपा.)प्रो. दिलीप सिंह, प्रो. वृषभ देव शर्मा, उच्च शिक्षा और शोध संस्थान दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास, पृ.सं.37
4. विमल, कुमार (1998). छायावाद का सौंदर्यशास्त्रीय अध्ययन. नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन. पृ.सं. 44
5. वही,पृ.सं. 44-45
6. वही,पृ.सं. 47
7. वही, पृ.सं. 48
8. विमल, कुमार (1998). छायावाद का सौंदर्यशास्त्रीय अध्ययन. नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन. पृ. सं.61
9. शुक्ल,मृदुला(2013). सुर काव्य में कविता संगीत और चित्रकला का अंत:संबंध.दिल्ली : दुर्गा प्रकाशन, पृ.सं. 28